118
712
P
M
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1531/L.M.

आह्वानांक Call No. ____________

अवाप्ति सं० Acc. No. 712

Mahatma Gandhi Ka Rashtriya Bigul

1 copy in Hindi

* वन्देमातरम् *

महात्मा गांधी का राष्ट्रीय बिगुल

प्रकाशक—

श्री मुन्शीसिंह 'रत्न' दलेलनगर निवासी

डा॰ गोकुलबेहटा प्रान्त-हरदोई

प्रथम बार — मूल्य -)

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
10 DEC 1930

891.431
M 278 M

॥ प्रार्थना ॥

जगत जिसका ये कुल बनाया हुआ है।
वही सब घटों में समाया हुआ है॥
नहीं दूसरा कोई है उस से बढ़ कर।
वह अपने में आपी भुलाया हुआ है॥
हर वक्त शै जो है यहां पे विरंगी।
ये अलबत्ता उसी का बनाया हुआ है॥
उसी की अक्ल में ये आती हैं बातें।
शरण वेद मत की जो आया हुआ है॥
है ताकत उसी में ही मुंह खोलने की।
जो कुछ भेद वेदों का पाया हुआ है॥
धरमदास अपनी उसी को फिकर है।
करोड़ों की दौलत लुटाया हुआ है॥

॥ झण्डा गायन ॥

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥
सदा शक्ति बरसाने वाला। प्रेम सुधा सरसाने वाला॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 712
Date 18.12.71

वीरों को हरषाने वाला। मातृभूमि का तन मन सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में। लख कर बढ़े जोश क्षण २ में
कांपे शत्रु देख कर मन में। मिट जावे भय संकट सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इस झंडेके नीचे निर्भय। लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय॥
बोलो भारत माता की जय। स्वतन्त्रता है ध्येय हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

आओ प्यारे वीरो आओ। देश धर्म पर बलि २ जाओ॥
साथ सब मिलकर गाओ। प्यारा भारत देश हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इसकी शान न जाने पावे। चाहे जान भले ही जावे॥
विश्व विजय करके दिखलावे। तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

गजल

बजाया जिसने आजादी का डंका है जमाने में।
वहा गांधी हमारे घाल्ने है जेल खाने में॥
यह सोचा लार्ड इर्विनने है सत्याग्रह के बारे में।

कि आन्दोलन न घटेगा अबतो गांधीके फसानेमें ॥
मगर यह जानलो दिलमें कि पकड़ा एक गांधी है ।
यहां तो कोटि बत्तीस अबतो हैं गांधी जमाने में ॥
वतन के वास्ते अब हम लड़ेंगे जंग आजादी ।
लिखी है जेल की रोटी हमारे आब दाने में ॥
हमें तो शर्म आती है कि चर्खा ही चलाने में ।
हमारे ही लिये है आज गांधी जेलखाने में ॥
या तो ये जानही जायेगी या फिर होगी आजादी ।
कसर बेदिल न रक्खेगा मुकद्दर आजमाने में ॥

गजल

कसली है कमर अब तो कुछ करके दिखादेंगे ।
आजाद ही होलेंगे या सर ही कटा देंगे ॥
हटने के नहीं पीछे डर के कभी जुल्मों से ।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ादेंगे ॥
जो शस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चर्खे का ।
चर्खे से जमीं क्या हम तो चर्ख गुंजादेंगे ॥
परवा नहीं कुछ दमकी गमकी नहीं मातम की ।
है जान हथेली पर एक पल में गवां देंगे ॥
उफ तक जबाँ से हम हरगिज न निकालेंगे ।

तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे ॥
सीखा है हम ने नया यह लड़ने का तरीका ।
चलवाओ गन मशीनें हम शीश अड़ा देंगे ॥
दिलवा दो हमें फांसी न खौफ है जरा भी ।
खूं से ही शहीदों के हम लो फौज बना देंगे ॥
मुसाफिर जो अंडमन के तू ने बनाये जालिम ।
आजाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे ॥

गजल

बे खौफ़ ज़ुल्म करलो अरमान रह न जाये ।
कुछ हिंद पर हरीफ़ो अहशान रह न जाये ॥
डायर से ज्यादा ज़ालिम करदो यहां रवाना ।
भारत के खूं का प्यासा मेहमान रह न जाये ॥
दिल खोल करके करना क़ातिल हलाक़ मुझको ।
क़ाज़िब में देख लेना कुछ जान रह न जाये ॥
कानून का बनाना रौलट से सीख लेना ।
बाकी दिलों में कोई अरमान रह न जाये ॥
खुश होके जिसको झेलें हिन्दोस्तान वाले ।
मुश्किल भी कोई ऐसी अहसान रह न जाये ॥
दम तो हो चुके हैं पर और भी कुचल लो ।
मुर्दों में बाकी कोई औसान रह न जाये ॥

अय हिन्द मेरे प्यारे हो जाऊं तुझ पै कुरबां।
कुछ फ़र्क मेरे तेरे दरम्यांन रह न जाये॥
फांसी लगा दो फौरन या एंडमान भेजो।
आज़ाद कोई बाक़ी इन्सान रह न जाये॥
माने अगर नसीहत गांधी की देशबासी।
देवों की सर ज़मी पर तूफ़ान रह न जाये
मुंह बन्द करदो भरदो हाथों में हथकड़ी भी।
लाने को कोई सरपे तूफ़ान रह न जाये।

गजल

अगर आजाद गैरों से मुल्क हिन्दोस्तां होगा।
तो हरइक नौजवां खुशहाल सतयुगका समां होगा॥
मगर अफसोस जकड़ा था गुलामी से मेरा भारत।
वह जल्दी वक़ आता है कि अपना राज यां होगा॥
कटेंगे फिर नहीं जलियां में यारो भेड़ बकरी से।
वह दिनभी जल्द आताहै कि मुल्कका राज यां होगा॥
न होगा मारसल्ला भी कि जब आजाद हम होंगे।
इसी भारतमें भीम अर्जुन सा हरइक नौजवां होगा॥
बला से जान भी जाये मगर ईमान रह जाये।
हमें होगी खुशी जबही हमारा खूं रवां होगा॥
वह हिन्दी हिन्द के बासी नहीं तोपों से डरते हैं॥

सुनो है आज मकतब में हमारा इम्तिहां होगा ॥
महात्मा गांधी जी ने हैं चलाया चक्र चर्खे का।
इसी से गैर के अन्याय का बस खातमा होगा ॥
फलेंगे और फूलेंगे हमारे बाग के बूटे।
जवाहर और मोती सा हमारा बाग बां होगा ॥
मचायेंगे परिंदे शोर वन्देमातरम् हर सू।
हमारे धर्म का राजा हमारा रहनुमा होगा।
सभी हिन्दू मुसलमां मिल यह कहते रामसे हैं अब।
भला कब तक हमारा यह जमीनों आसमां होगा ॥

गजल

तैयार हैं जेलों में हम चक्की चलाने के लिये।
कटिबद्ध हैं हम मूंज की रस्सी बनाने के लिये ॥
मंजूर सुर्खी कूटना कोल्हू चलाना है हमें।
तैयार हैं हम अन्न भुना दाना चबाने के लिये ॥
कम्बल बिछौने ओढ़ने में कष्ट ही है क्या हमें।
तैयार हैं हम भूमि पर बिस्तर बनाने के लिये ॥
निज धर्म पालन केलिये डर तोप गोलेका कहां।
तैयार हैं आनन्द पूर्वक मृत्यु पाने के लिये ॥
जबतक नहीं स्वाधीन भारत स्वर्गमें भी सुख नहीं।
तैयार हैं हम नर्क का भी कष्ट पाने के लिये ॥

गजल

बुलबुल यहां न गाओ तरसाये हुये हैं।
गुल हिन्द के चमन में मुरझाये हुये हैं॥
हस्ती हमारी जबतक कायम रही चमन में।
इज्जत रही तुम्हारी ठुकराये हुये हैं॥
गैरोंने घुसके अन्दर कब्जा किया वतन पर।
सब जर जमीं खजाना लुटवाये हुये हैं।
पहिना के मुद्दतों से ये तौक गुलामी का।
बैठा दिया यहां पर घबराये हुये हैं॥
देखा कभी जबाँसे आज़ाद लफज निकला।
घर द्वार माल अपना छिनवाये हुये हैं॥
आफतपड़ी हुजूर पे दुश्मनको शिरचढ़ा के।
कई लाख वीर भाई कटवाये हुये हैं॥
अपनी मुसीबतों को जाहिर अगर हैं करते।
तोपों मशीन गन से उड़वाये हुये हैं॥
जाहिर हो शान जिससे सबपर हजूर कीये।
स्कूल के मदारिस पिटवाये हुये हैं॥
गर मुल्ककी ये खिदमत करनेको जबखड़े हों।
पकड़ा के जेल में हां सड़वाये हुये हैं॥
भूखों मरे यहां हम रफ्तानगी वहां।

गैरों के मुल्क को सभी भिजवाये हुये हैं ॥
कब तक रहेंगे सहते बतला मेरे खुदाया।
हम मुद्दतों से दिल को समझाये हुये हैं ॥
अब चीख से हमारी होगा विनाश तेरा।
रघुवर की बात गांधी अपनाये हुये हैं ॥

जवाब मर्द का

गजल दादरा

कैसे राग निराले सुनाती मुझे।
कोई चीज विदेशी न भाती मुझे ॥
क्या तेरी अक्ल सड़ गई बिल्कुल ही बेहया।
दुख देख देश का तुझे आती नहीं दया ॥
बात ऐसी न तेरी सुहाती मुझे ॥ कैसे राग० ॥
भूखों से लाखों देश के भाई तड़फ रहे ॥
जिसको कि ब्रटिस मौज से खूब हड़प रहे।
तेरी बुद्धि मठीक दिखाती मुझे ॥ कैसे राग० ॥
उपदेश गांधी का जब से मैंने सुना है।
कर मींज मींज रोया खूब सर को धुना है ॥
चाहे कोई कहे अब दिहाती मुझे ॥ कोई चीज० ॥

कहती है सिवाले में अब हरगिज न आइये।
ईसा का हुक्म गिरजा में चल कर बजाइये॥
तुझको पूरी किरानी दिखाती मुझे॥ कोई चीज०॥
हट हट जहर घुभी छुरी हट सामने से भट।
गिट पिट न कर सटक यहां से सामने से हट॥
तेरी शीरी ज़बां खाय जाती मुझे॥ चीज०॥
बस आज से प्रण कर न ऐसे शब्द कहूंगी।
जिस ढंग आप रक्खेंगे उस विधि से रहूंगी॥
वैसे खैर तेरी न दिखाती मुझे॥ चीज०॥
क्या गुन गिना रही है कहे क्यों न जोर से।
यों सामने खड़ी कढ़ी भुतनी जो गौर से॥
शकल तेरी न नेक सुहाती मुझे॥ चीज०॥

॥ जवाब स्त्री का ॥

॥ गजल दादरा ॥

चेला गांधी के बाबू हमारे भये।
कोई आके तमाशे निहारे नये॥
शा री आप को अब क्यों सहायगी।
अरु वस्तु विदेशी भी कोई कैसे भायगी॥

सारे बस्तु विदेशी पजारे गये ॥ चेला० ॥
अब कोट बूट सूट ये तन पर न धरेंगे।
नेकटाई हैट पैन्ट की रक्षा न करेंगे ॥
लाखों जख्म जिगर में करारे भये ॥ चेला०॥
बिसकुट व पाव रोटी म.स ये न खायेंगे।
मदिरा में कभी भूल कर न कर छुआयेंगे ॥
कैसे धोखे बिचार प्रचारे गये ॥ चेला० ॥
मूछेँ न छटायेंगे अब चोटी बढ़ायेंगे।
बालों को संभारेंगे नहीं सर घुटायेंगे ॥
अब तो झंडा तिरंगा उठाये गये। चेला० ॥
अब तक ठाट बाट से घर काठ हाट में।
मशगूल रहा करते थे फैशन की चाट में ॥
अब स्वदेशी बिचार बिचारे गये । चेला०॥

मसीह

धन्य गंधी ने भारत जगाया, देश आजाद अपना बनाया।
अबतो घर २ में चर्खा चला दो।
लंका शायर के छक्के छुड़ा दो ॥
चीजें जो हों बिदेशी हटादो ।
और स्वदेशी का सिक्का जमादो ॥
यह जवाहरने भी समझाया। देश० ॥
मान जो चाहते हो बढ़ाना ।
वीरता का असर कुछ दिखाना ॥
होगा जिश्रो बसक यह जमाना ।

अब गरीबों का होगा ठिकाना ॥

मार्ग सीधा यह सबको सिखाया । देश० ॥

हम करें क्यों किसी का सहारा।

देश भारत हमारा हमारा

इसमें ना है किसी का इज़ारा।

अपना अपना वतन है पियारा ॥

बच्चा बच्चा के दिल में समाया ॥ देश० ॥

'रत्न, की सीख को ना भुलाओ।

नाम दुनियां में अब ना डुबाओ ॥

सुस्ती अपने वतन की मिटाओ ।

मात भारत को पार लगाओ ॥

आखिरी वही मंजिल बताया ॥ देश०॥

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें

लखी महात्मा की ग्यारह सरतों पै ध्यान अब तुमको लाना होगा ।

सहे हैं ज़ुल्म व सितम बहुत कुछ न आगे हमको सताना होगा ॥

१--नसीली चीजोंका क्रय व बिक्रय को बन्दकर एक्स चेन्जकी दर ।

दो एक शिलिङ्ग चार पेंसकी कर यहकरके तुमको दिखाना होगा ।

२-जमीन का भी लगान आधा करो कृषक जिसमें दुख न पावें ।

विभाग इसका हमारी कौन्सिल के हाथ में अब दिलाना होगा ॥

लगाय रक्खा नमक पै कर जो उठालो इसकी करो न देरी।
है फौज पल्टनका खर्च जो कुछभी आधा उसको घटाना होगा॥
बड़े २ अफसरों कि तनख्वाह आधी करदो या और कुछ कम।
घटी हुई आमदनी से ही अपना खर्चा तुमको चलाना होगा॥
स्वदेशी कपड़े की उन्नती के लिये विदेशी बसन के ऊपर।
लगाओ कर उसमें चौगुना तुम नियम ये ऐसा बनाना होगा॥
जहाज ब्यापार के लिये जो हमारे चलते समुद्र में हैं।
लगाया उनपे जो कर है तुमने वह जल्द तुमको हटाना होगा॥
जिन्हें कि हत्या के जुर्म में हैं मिली सजा उनको छोड़ कर के।
जो राजनैतिक हमारे कैदी हैं उनकी बन्दी कटाना होगा॥
जो राजनीतिक के मामले चल रहे हैं उनको उठाओ साहब।
वह एक सौ चौबिस को सारी लगभग रद्दी कराना होगा॥
हमारे लीडर विदेशों को जो पठाये जबरन गये हैं फौरन।
स्वदेश आने का हुक्म उनके लिये भी तुमको सुनाना होगा॥
विभाग खुफिया पुलिस का तोड़ो या उसपे अधिकार हो हमारा।
वह आत्म रक्षा के हेतु हमको भी चैम्पियन गन बधाना होगा॥
'विमल' ये कहते हैं लार्ड इरबिन से कहना गांधी का पूरा करदो।
नहीं ओ अपनी प्रजा के कदमों में शीश तुमको झुकाना होगा॥

गजल

करना है बलिदान, उठो अब भारत की संतान।
हंसते हुये फूल में आकर, शीश झुका दो मां के पग पर।

लगाय रक्खा नमक पै कर जो उठालो इसको करोन देरी।
है फौज पल्टनका खर्च जो कुछभी आधा उसको घटाना होगा॥
बड़े २ अफसरों कि तनख्वाह आधी करदो या और कुछ कम।
घटी हुई आमदनी से अपना ही खर्च तुमको चलाना होगा॥
स्वदेशी कपड़े की उन्नती के लिये विदेशी बसन के ऊपर।
लगाओ कर उसमें चौगुना तुम नियम ये ऐसा बनाना होगा॥
जहाज व्यापार के लिये जो हमारे चलते समुद्र में हैं।
लगाया उनपे जो कर है तुमने वह जल्द उसको हटाना होगा॥
जिन्हें कि हत्या के जुर्म में हैं मिली सजा उनको छोड़ कर के।
जो राजनैतिक हमारे कैदी हैं उनकी बन्दी कटाना होगा॥
जो राजनीतिक के मामले चल रहे हैं उनको उठाओ साहब।
वह एकसौ चौबिस की सारी लगभग दफायें रद्दी कराना होगा॥
हमारे लीडर विदेशों को जो पठाये जबरन गये हैं फौरन।
स्वदेश आने का हुक्म उनके लिये भी तुमको सुनाना होगा॥
विभाग खुफिया पुलिस का तोड़ो या उसपे अधिकार हो हमारा।
वह आत्मरक्षा के हेतु हमको भी चैम्पियन गन बधाना होगा॥
'विमल' ये कहते हैं लार्ड इरविन से कहना गांधी का पूरा करदो।
नहीं तो अपनी प्रजा के कदमों में शीश तुमको झुकाना होगा॥

गजल

हमें अब करना है बलिदान, उठो अब भारत की संतान।
हंसते हुये फूल में आकर, शीश झुकादो मां के पग पर।

कटता हो कट जाने दो सर, होना नहीं मलान ॥ उठो० ॥
सोने वाले अब्बी उठ कर, आगे हुये बढ़ो वेदी पर।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, अब छोड़ो नहिं ध्यान ॥ उठो० ॥
हो चमार भंगी या पासी, विप्र पुजारी या सन्यासी।
धनी दरिद्री हो उपवासी, सब का भाग्य समान ॥ उठो० ॥
उठो अरब मूरख विद्वानो,, हिंदू मुसलिम और किसानो।
जैन पारसी सिक्ख महानो, प्यारी माँ के प्रान ॥ उठो ॥
ओ छात्रो भावी अधिकारी,, उठा २ निद्रत व्यापारी।
उठो मजूरो दीन भिखारी,, दुखी दरिद्र जवान ॥ उठो० ॥
हो गुलाम फैसाली रागी, वर्तमान शासन अनुरागी।
नर्म गर्म वैरागी त्यागी,, उठो सभी मत मान ॥ उठो० ॥
स्वारथ औ मत भेद मिटाओ, वैर फूट को दूर भगाओ।
फैलादो सब आज हिंद में, स्वतंत्रता की तान ॥ उठो० ॥
फांसी चढ़ो जेल में जाओ, चुप मत रहो सुनाते जाओ ॥।
हथकड़ियों में भिजकर गाओ, करो स्वदेशी गान ॥ उठो० ॥
पूर्ण करो यह माता का, ज्यों प्रताप अभिमानी बांका।
ज्यों शिवराज सूर्ज गुरुनाका, जैसे तिलक महान ॥ उठो० ॥
उठी गगन झनकार दुखारी, गांन्धी की बीणा अति प्यारी।
माधव मस्त हो उठो देखलो, कालों में है जान ॥ उठो० ॥

मोतीलाल की गिरफ़्तारी

ग़ज़ल दादरा

जेल में हाय मोती हमारा गया।
वीर भारत का प्यारा दुलारा गया॥

साइमन का अब जनाज़ा निकला इलाहाबाद में।
सरकार ने भी कुछ कसर रक्खी नहीं इमदाद में॥
और महमूद पकड़ा बिचारा गया॥ जेल में०॥
यह खबर बिजली की माफिक फैली कुल संसार में।
हो गई दूकानें बन्द संघाटा कुल बाज़ार में॥
सायमन का जनाजा निकारा गया॥ जेल०॥
अब जवाहर और मोती ही हवाले से गये।
यह सुनी अब दास्तां ससपंज में लीडर भये॥
हो जिगर भी मेरा पार पारा गया॥ जेल में०॥
"रत्न" क्या मोती गये कांटा सा दिल में गड़ गया।
आंन्दोलन कम नहीं अब और दूना बढ़ गया॥
और राजेन्द्र पकड़ा बिचारा गया॥ जेल में॥

चरखा कातो

हाँ बहिनों चरखे से देश सुधार है।
हाँ चरखा कातो तो बेड़ा पार है॥
हां गांधी जी का यही फरमान है।
हां चरखा भारत का ही कल्यान है।
हां चरखा नारियों का शृंगार है। हां चरखा०॥
हां लन्दन को नीचा दिखायेगा॥
हां चरखा स्वराज्य की राह बतायेगा।
हां इससे दुनियां का उपकार है॥
हां इससे बढ़ती है कौमी शान भी। हां चरखा०॥
हां होगा फ़ख़ जहां हिन्दोस्तान भी॥
हां चरखे पै सारा दारो मदार।
हां चरखा कातो तो बेड़ापार है॥

पं० गिरिधरगोपाल शुक्ल के भारत प्रिंटिंग प्रेस कानपुर में छपा॥